धर्म : एक दार्शनिक विवेचन

हरिकेश कुमार त्रिपाठी

भारतीय धर्म दर्शन प्रायः एकत्ववादी है। धर्म समन्वय के दृष्टिकोण से गीता का सर्वप्रमुख स्थान है। गीता में ईश्वरवाद, रहस्यवाद, एकत्ववाद इत्यादि अनेक धाराओं का सन्तुलन दृष्टिगोचर होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो भक्त श्रद्धा से दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं वे भी मुझे ही अविधिपूर्वक पूजते है। सांख्य, योग, शैव, वैष्णव इत्यादि अनेक मत हैं जिन्हें लोग अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न रीति से अपनाते हैं। कोई किसी एक को और कोई अन्य को उत्तम समझता है। तो भी इन सभी का एक ही प्राप्ति स्थान, लक्ष्य स्थान है। कुछ मार्ग सीधे और सरल है और कुछ टेढ़े और दुरूह। सत्य सर्वव्यापक होता है। इस पर किसी जाति या गुण का एकाधिपत्य नहीं माना जा सकता है। वही मूल सत्य ही विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की नानाविध धर्मपुस्तकों में, अनेक भाषाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। जबकि धर्म का क्षेत्र अकथनीय अनुभूति है। धर्म मानव का स्वाभाविक गुण है, और प्रत्येक मानव में किसी न किसी धर्म को अपनाकर अपनी पूर्णता प्राप्त करने की जन्मजात प्रेरणा पायी जाती है। जब भी किसी व्यक्ति विशेष को यह प्रतीत होता है कि उसे सर्वोत्तम आदर्शरूप प्राप्त हो गया है जो वह प्राप्त करना चाहता था तब वही अवस्था जीवन–परिवर्तन कही जाती है। जीवन–परिवर्तन किसी एक अमुक धर्म की निधि नहीं है। सामान्य रूप से धर्म का अभिप्राय है कि जिस व्यवस्था के कारण व्यक्ति में निहित सभी पाशविक वृत्तियाँ उदात्तरूप ले लेती है और व्यक्ति उर्ध्वदिशा में अनुप्राणित हो जाता है।